ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multi-Disciplinary e-Journal

Bi-Monthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal

The Expression Journal

Impact Factor 3.9

Vol. 3 Issue 4 August 2017

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal
(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)
www.expressionjournal.com ISSN: 2395-4132

मलिनता एवं गरीबी

जसनदीप सिंह,
शोधकर्ता तांतिया विश्वविद्यालय, गंगानगर
एवं
डॉ कालूराम,
शोध निदेशक, तांतिया विश्वविद्यालय, गंगानगर

मलिनता का सीधा संबंध बीमारी, अशिक्षा, कुपोषण और गरीबी से है। सभी आयामों से हमारे जीवन में स्वच्छता बहुत महत्वपूर्ण है। हमें पूरे जीवनभर इसका ध्यान रखना चाहिए। स्वच्छता की शुरुआत सबसे पहले हमारे घर और स्कूल से बहुत छोटी सी आयु से ही शुरु हो जाती है। यदि हम स्वच्छता को नहीं बनाये रखते तो यह हमें बहुत बुरी तरह से प्रभावित करती है।[1]

किसी भी देश में स्वच्छता को बनाये रखना शिक्षा के स्तर, गरीबी, देश की जनसंख्या आदि पर निर्भर करता है। सबसे महत्वपूर्ण कारक शिक्षा है क्योंकि अच्छी शिक्षा मलिनता और गरीबी के स्तर को कम कर सकती है और बढ़ती हुई जनसंख्या से राहत प्रदान कर सकती है। यदि देश का नागरिक शिक्षित होगा तो वह स्वयं मलिनता से दूर रहेगा और पूरे देश में स्वच्छता को बनाये रखेगा। वो अगली पीढ़ी में अपनी अच्छी आदतों को भी हस्तान्तरित कर सकता है। भारत में सरकार द्वारा बहुत से स्वच्छता अभियानों को चलाया जा रहा है हालांकि, निरक्षरता की दर बहुत ज्यादा होने के कारण किसी में भी अधिक सफलता नहीं मिली है। अभी हाल ही में, भारतीय प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी, ने देष से मलिनता और गरीबी को दूर करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान नाम से, सफाई अभियान चलाया जो काफी सफल रहा है।[2]

[1]गरीबी और अकाल, अमर्त्यसेन

[2]स्वच्छ एवं सम`द्ध

गरीबी एक मानवीय परिस्थिति है जो मानव जीवन में निराशाऔर दुख लाती है। गरीबी पैसे की कमी है और जीवन को उचित तरीके से जीने के लिए सभी चीजों की आवष्यकता होती है। गरीबी एक बच्चे को बचपन में स्कूल में दाखिला लेने में अक्षम बनाती है और वो एक दुखी परिवार में अपना बचपन बिताने या जीने को मजबूर होते हैं। निर्धनता, पैसों की वजह से दो वक्त की रोटी, बच्चों के लिए किताबें नहीं जुटा पाने और बच्चों का सही तरीके से पालन–पोषण नहीं कर पाने के लिए जिम्मेदार अभिवावक का दुख आदि है। हमलोग गरीबी को बहुत तरीके से परिभाषित कर सकते हैं। भारत में गरीबी देखना बहुत आम–सा हो गया है क्योंकि ज्यादातर लोग अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को भी नहीं पूरा कर सकते हैं। यहां पर जनसंख्या का एक विशाल भाग निरक्षर, भूखे और बिना कपड़ों और घर के जीने को मजबूर है। भारतीय अर्थव्यवस्था के कमजोर होने का यही मुख्य कारण है। गरीबी के कारण लगभग भारत में आधी आबादी दर्द भरा जीवन जी रही है।

यह बहुत गंभीर विषय है और यदि हम भारत का वास्तव में विकास चाहते हैं, तो हमें अपने देश में स्वच्छता बनाई रखनी पड़ेगी जिसे हम अपने घर से बेहतर ढंग से शुरु कर सकते हैं। हमें यह समझना होगा कि हमारा देश ही हमारा घर है और उसके बाद कोई भी समस्या नहीं होगी। देश का नागरिक होने के नाते, हम सभी उस गंदे स्थान को साफ करने के लिए जिम्मेदार हैं, जो भी हम देखते हैं। हमें अपनी सड़कों, यात्रा स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों, स्कूलों, कॉलेजों, ऑफिसों आदि को बहुत साफ सुथरा रखना चाहिए।[3]

देश को मलिनता से मुक्त करने के लिए सबसे पहले हमें सार्वजनिक स्थलों को गंदा नहीं करना चाहिए और यदि ये गंदे हो गये हैं तो, हमें इसे साफ करना चाहिए क्योंकि इसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं। इस जिम्मेदारी को सभी भारतीय नागरिकों को समझने की आवश्यकता है। हमें हमारी सोच को बदलने की आवश्यकता है क्योंकि केवल इसी के द्वारा हम भारत को स्वच्छ रख सकते हैं। बहुत से स्वच्छता संसाधन और प्रयास तब तक अधिक प्रभावशाली नहीं होंगे तब तक कि हम अपनी सोच नहीं बदलते कि, पूरा देश हमारे घर की तरह है और हमें इसे स्वच्छ रखना है। यह हमारी सम्पत्ति है, न कि दूसरों की। हमें यह समझने की जरूरत है कि, एक देश घर की तरह होता है, जिसमें बहुत से परिवार के लोग संयुक्त परिवार की तरह रहते हैं।[4]

---

[3]महाराष्ट्रातील गरिबी, डॉ सुनील

[4]स्वच्छ भारत अभियान– चुनौतियां एवं अवसर, अरविन्द शुक्ला

किसी भी व्यक्ति या इंसान के लिये गरीबी अत्यधिक निर्धन होने की स्थिति है। ये एक पराकाष्ठा की स्थिति होती है जब छत, जरूरी भोजन, कपड़े, दवाईयां आदि जैसी जीवन को जारी रखने के लिए महत्वपूर्ण चीजों की कमी एक व्यक्ति को महसूस होती है। निर्धनता व्याप्त होने के सामान्य कारण हैं जैसे अत्यधिक जनसंख्या, जानलेवा और संक्रामक बीमारिया, प्राकृतिक आपदा, कम कृषि पैदावर, बेरोजगारी, जातिवाद, अशिक्षा, मलिनता, लैंगिक असमानता, पर्यावरणीय समस्याएं, देश में अर्थव्यवस्था की बदलती प्रवृति, अस्पृश्यता, लोगों का अपने अधिकारों तक कम या सीमित पहुंच, राजनीतिक हिंसा, प्रायोजित अपराध, भ्रष्टाचार, प्रोत्साहन की कमी, अकर्मण्यता, प्राचीन सामाजिक मान्यताएं आदि। भारत में निर्धनता को अनेक सरकारी समाधानों के द्वारा घटाया जा सकता है हालाँकि सभी नागरिकों के व्यक्तिगत प्रयासों की जरुरत है।

हमें यह मानना चाहिए कि, घर के अंदर की वस्तुएं हमारी अपनी सम्पत्ति है, और उन्हें कभी भी गंदा और खराब नहीं करना चाहिए। इसी तरह, हमें यह भी मानने की आवश्यकता है कि, घर के बाहर, प्रत्येक वस्तु भी हमारी अपनी सम्पत्ति है, और उसे हमें गंदा नहीं करना चाहिए और उन्हें स्वच्छ रखना चाहिए। हम अपने देश की बिगड़ी हुई स्थिति को सामूहिक स्वामित्व की भावना से बदल सकते हैं। संरचनात्मक परिवर्तनों के स्थान पर, औद्योगिक, कृषि, और अन्य क्षेत्रों से कचरे के लिए प्रभावशाली प्लांटों का निर्माण करके, सरकार द्वारा कानूनों और नियमों को बनाया जाना चाहिए। हमें अपनी खुद की जिम्मेदारी को अपनी सोच का प्रयोग करके अपने प्रयासों के द्वारा मानने की आवश्यकता है। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। यह प्रत्येक और सभी भारतीय नागरिकों की सामूहिक जिम्मेदारी है।[5]

यह बात भी पूरी तरह से सत्य है कि, पूरे देश को मलिनता और गरीबी से एक दिन या साल में मुक्ति नहीं दिलायी जा सकती है, हालांकि, यदि हम भारत में सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने पर रोक लगाने में ही सफल हो जाते हैं, तो यह भी हमारी बड़ी भागीदारी होगी। यह हमारी जिम्मेदारी है, कि हम स्वयं को रोकने के साथ–साथ उन दूसरे लोगों को भी रोकें जो हमारे भारत को गंदा कर रहे हैं। हम सामान्य तौर पर अपने परिवारों में देखते हैं कि, घर का प्रत्येक सदस्य कुछ विशेष जिम्मेदारी (कोई झाड़ू लगाता है, कोई सफाई करता है, कोई सब्जी लाता है, कोई घर के बाहर के कार्य करता है आदि) रखता है, और उसे यह कार्य समय पर किसी भी कीमत पर करने पड़ते हैं। इसी तरह, यदि सभी भारतीय अपने आस–पास के चारों ओर के छोटे स्थान के लिए अपनी

[5]गरीबी का वैष्वीकरण, जितेंद्र गुप्ता

जिम्मेदारियों (स्वच्छता और गंदगी फैलाने से रोकना) को लेते हैं, तो मेरा मानना है कि वो दिन दूर नहीं, जब हम देश में चारों ओर स्वच्छता को देखेंगे।

देश में गरीबी उन्मूलन की योजनाएं तो खूब हैं, लेकिन भूमि सुधार से हमेशा परहेज किया जाता रहा है। नौकरशाही का रवैया और भ्रष्टाचार भी गरीबी उन्मूलन में बड़ी बाधा है। भारत और दुनिया की प्रमुख समस्याओं में से एक गरीबी है। गरीबी मात्र समस्या ही नहीं बल्कि एक अभिशाप है। भारत की 70 फीसदी आबादी अभी भी भरपेट खाना नहीं खा पाती। भारत में आर्थिक विकास जितना बढ़ रहा है उतनी ही गरीबी भी बढ़ रही है। वास्तव में गरीबी और विषमता घटने की बजाय बढ़ गई है। प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहाकार परिषद् के अध्यक्ष सुरेश तेंदुलकर की अध्यक्षता में एक विशेषज्ञ समिति ने रिपोर्ट तैयार की, इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में 37.2% लोग गरीब है। यह आंकड़ा 2004–05 में किये गए 27.5%के आकलन से करीब 10 फीसदी अधिक है। इसका मतलब है कि पिछले 11 वर्षो में अतिरिक्त 11 करोड़ लोग गरीबी रेखा के नीचे सरक गए हैं। एक तरफ गरीबों की संख्या बढ़ रही है और दूसरी तरफ अरबपतियों की भी। यह बढ़ती आर्थिक विषमता को दर्शाता है। उदाहरण के लिए भारत के तीस धनी परिवारों की संपत्ति भारत की सम्पदा की एक तिहाई है। इन तीस परिवारों के हाथों में जितना धन आता रहेगा, उतनी ही देश की समृधि बढ़ती रहेगी। इस प्रकार मुट्ठी भर अमीर बढ़ती गरीबी का बदसूरत चेहरा छिपा लेते हैं। अगर ये तीस परिवार अमेरिका या यूरोप में बस जायें तो भारत की 7.9 प्रतिषत विकास दर घटकर 6 प्रतिषत ही रह जाएगी।[6]

भारत जैसे विकासशील देशों में मलिनता एवं गरीबी के उन्मूलन की विफलता के लिए आम तौर पर आर्थिक असमानताओं को जिम्मेदार ठहराया है। भारत में मलिनता और गरीबी उन्मूलन के लिए इंदिरा आवास योजना, राजीव गांधी राष्ट्रीय पेयजल मिशन और राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना जैसी कई योजनाएं लागू की गई हैं। इन्हें गरीबों को सशक्त बनाने और उनके आर्थिक उत्थान में सहायता प्रदान करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। गरीबों को लघु–ऋण प्रदान करने के लिए भी कई पहल की गई है। लेकिन इनमे से कोई भी भारत में गरीबों की स्थिति पर प्रभाव किसी भी तरह का कोई प्रभाव नहीं डाल पाई हैं। मूल मुद्दा, जिसकी तरफ देखे जाने की आवश्यक्ता है, वह ये है कि क्या लोगों को ऐसे रोजगार दिए जा रहे हैं जिनमे वे उत्पादक साबित हों।[7]इसको सुनिश्चित किये बिना सस्ते आवास जैसी सुविधाएं लम्बे समय तक काम नहीं करेंगी। यदि

[6]भारतीय राज्यों का विकास, अमर्त्यसेन

[7]स्वच्छ भारत–क्लीन इंडिया, मृदुला सिन्हा, और आर के. सिन्हा

लोग ऐसी आर्थिक गतिविधियों में नहीं लगे होंगे जो आय का स्थायी साधन हो तो वे सरकार द्वारा दी हुई संपत्ति बेचने पर मजबूर हो जायेंगे। इस प्रकार वहां उनकी आर्थिक स्थिति में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं होगा।

राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को 100 दिन तक रोजगार भले ही उपलब्ध करा दिया हो पर इसमें बुनियादी ढांचे के विकास पर ही जोर है। यह तरीका दीर्घकाल में विफल साबित होता रहता है क्यूंकि लोगों को आमतौर पर श्रम प्रधान गतिविधियों में ही नियोजित किया जाता है। इसलिए वो कोई भी ऐसा तकनीकी अथवा व्यावसायिक कौशल नहीं प्राप्त कर पाते हैं जिससे उन्हें रोजगार के और अधिक अवसर प्राप्त हो सके। जरूरत इस बात की है कि बुनियादी ढांचे को इस प्रकार बनाया जाए और किसी क्षेत्र में रहने वाले लोगों को इस प्रकार के व्यवसायों में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए जिसके लिए जरूरी संसाधन आस–पास के इलाके में ही उपलब्ध हों। सरकार को किसी भौगोलिक क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों की पड़ताल करने के बाद ही प्राथमिक उद्योगों को निम्न आय वर्ग के लोगों को नियोजित करना शुरू कर देना चाहिए।

ग्रन्थसूची

1. गरीबी और अकाल–*अमर्त्यसेन*
2- स्वच्छ एवं समृद्ध भारत–*पंकज के. सिंह*
3- महाराष्ट्रातील गरीबी –*डॉ सुनील*
4- स्वच्छ भारत अभियान–*चुनौतियां एवं अवसर, अरविन्द शुक्ला*
5- गरीबी का वैष्वीकरण–*जितेंद्र गुप्ता*
6. भारतीय राज्यों का विकास–*अमर्त्यसेन*
7. स्वच्छ भारत–क्लीन इंडिया, *मृदुला सिन्हा, और आर के. सिन्हा*